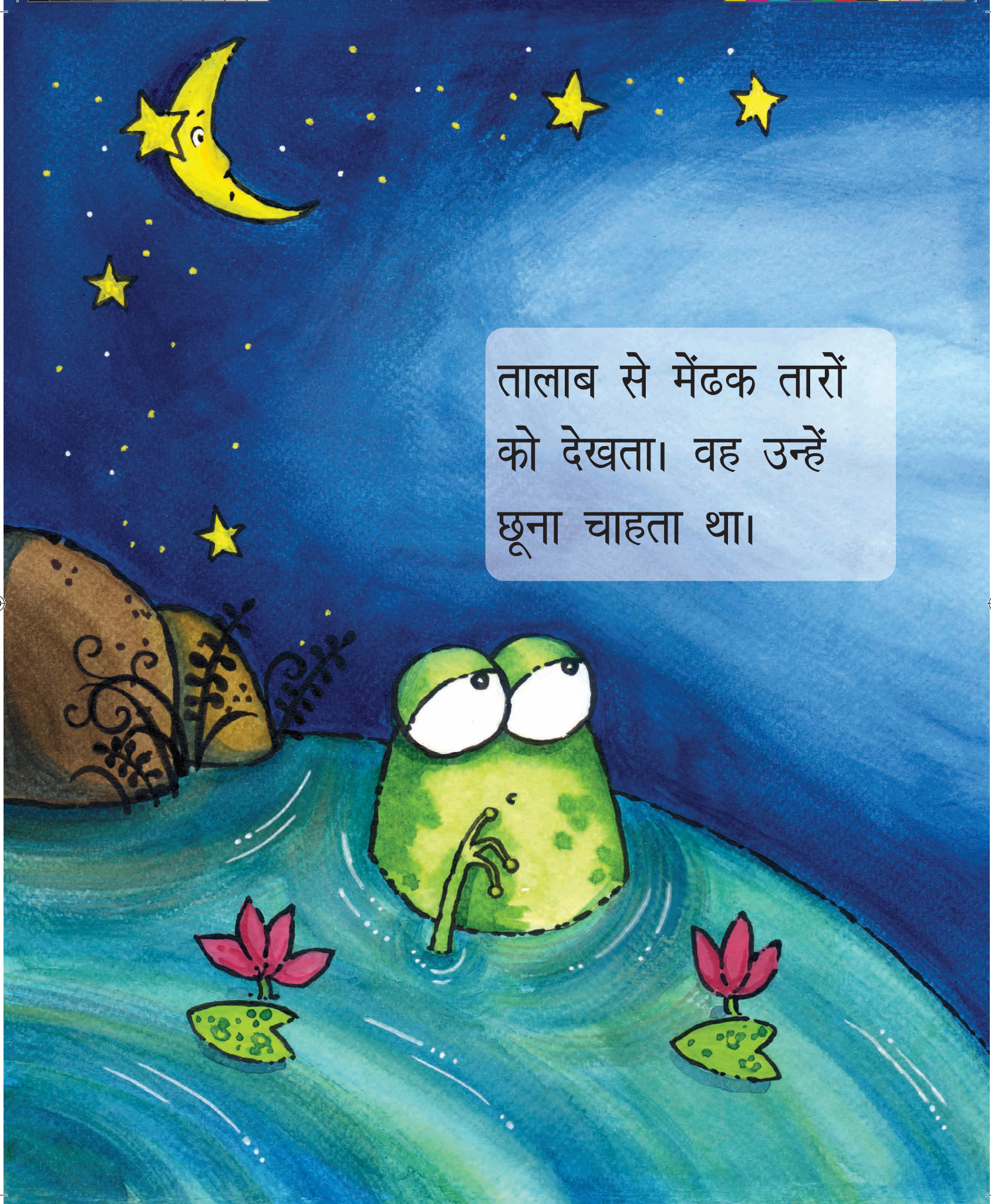




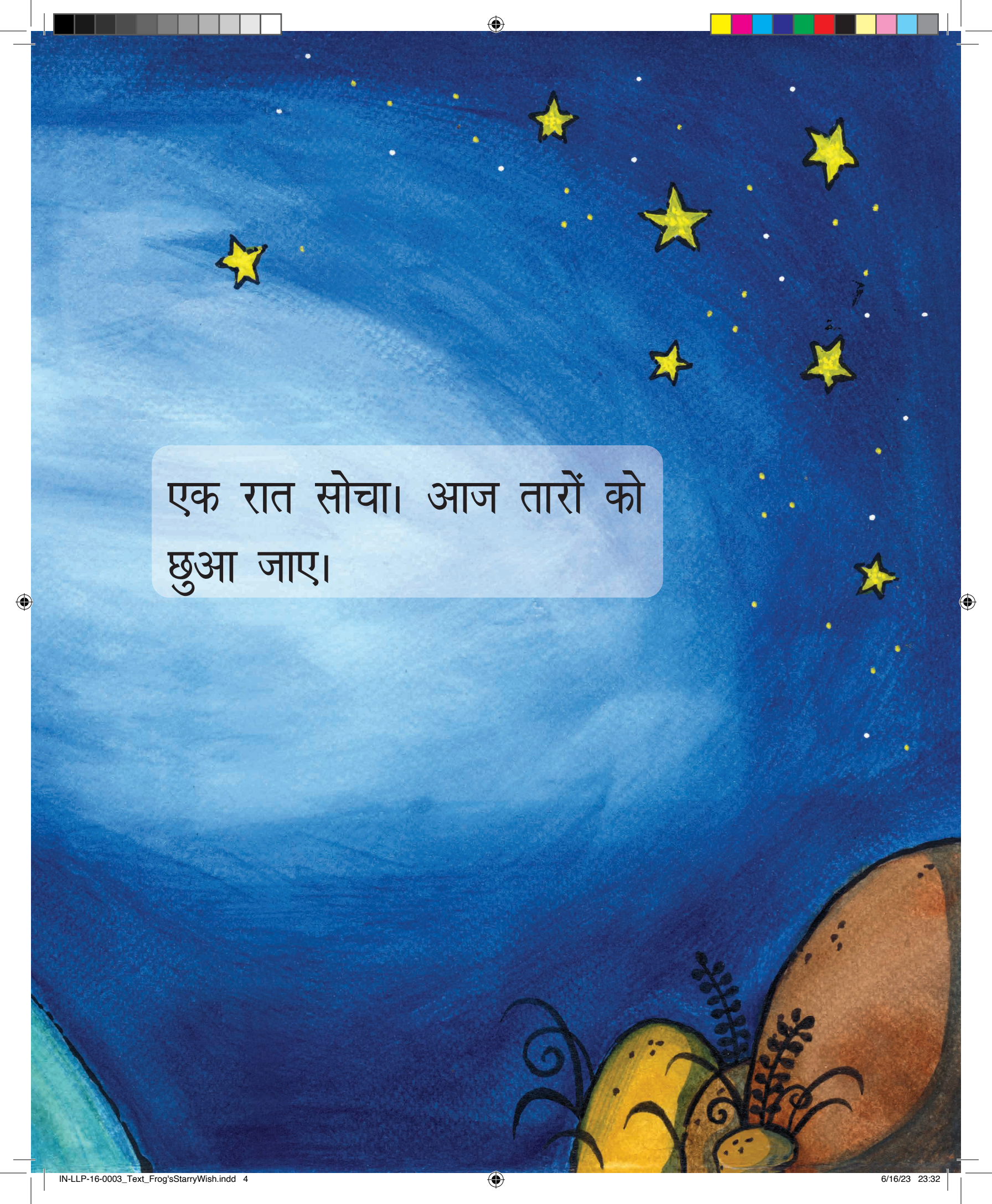
मेंढक का तारों भरा सपना





तालाब से मेंढक तारों
को देखता। वह उन्हें
छूना चाहता था।





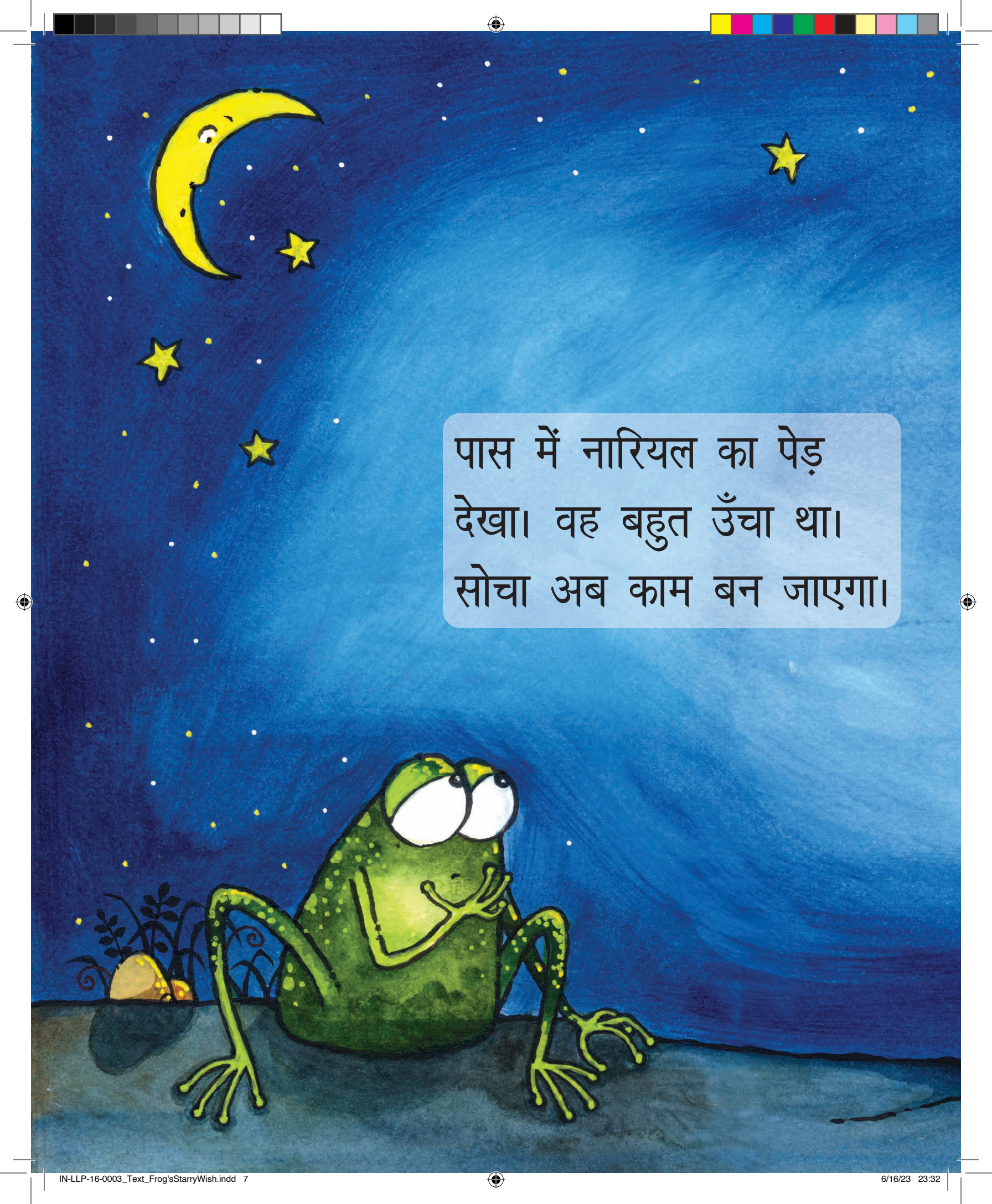
एक रात सोचा। आज तारों को
छुआ जाए।

वह बड़े पत्थर पर चढ़ा।
हाथ बढाया...
पर तारे हाथ न आए।



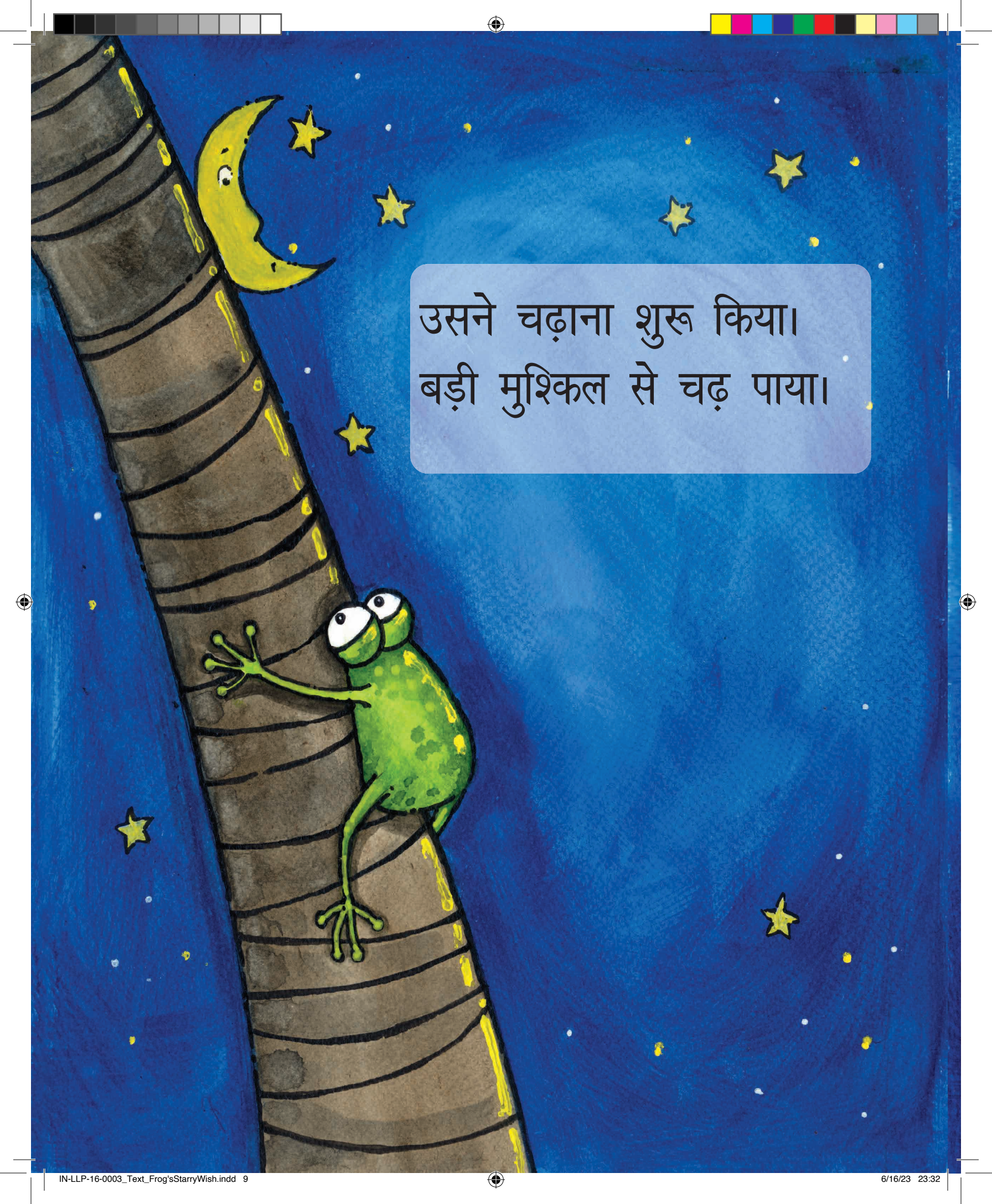
फिर टीले पर चढ़ा।
हाथ बढ़ाया...
पर तारे हाथ न आए।





पास में नारियल का पेड़
देखा। वह बहुत उँचा था।
सोचा अब काम बन जाएगा।






उसने चढ़ाना शुरू किया।
बड़ी मुश्किल से चढ़ पाया।

हाथ बढ़ाया... तारे
फिर भी हाथ न आए।

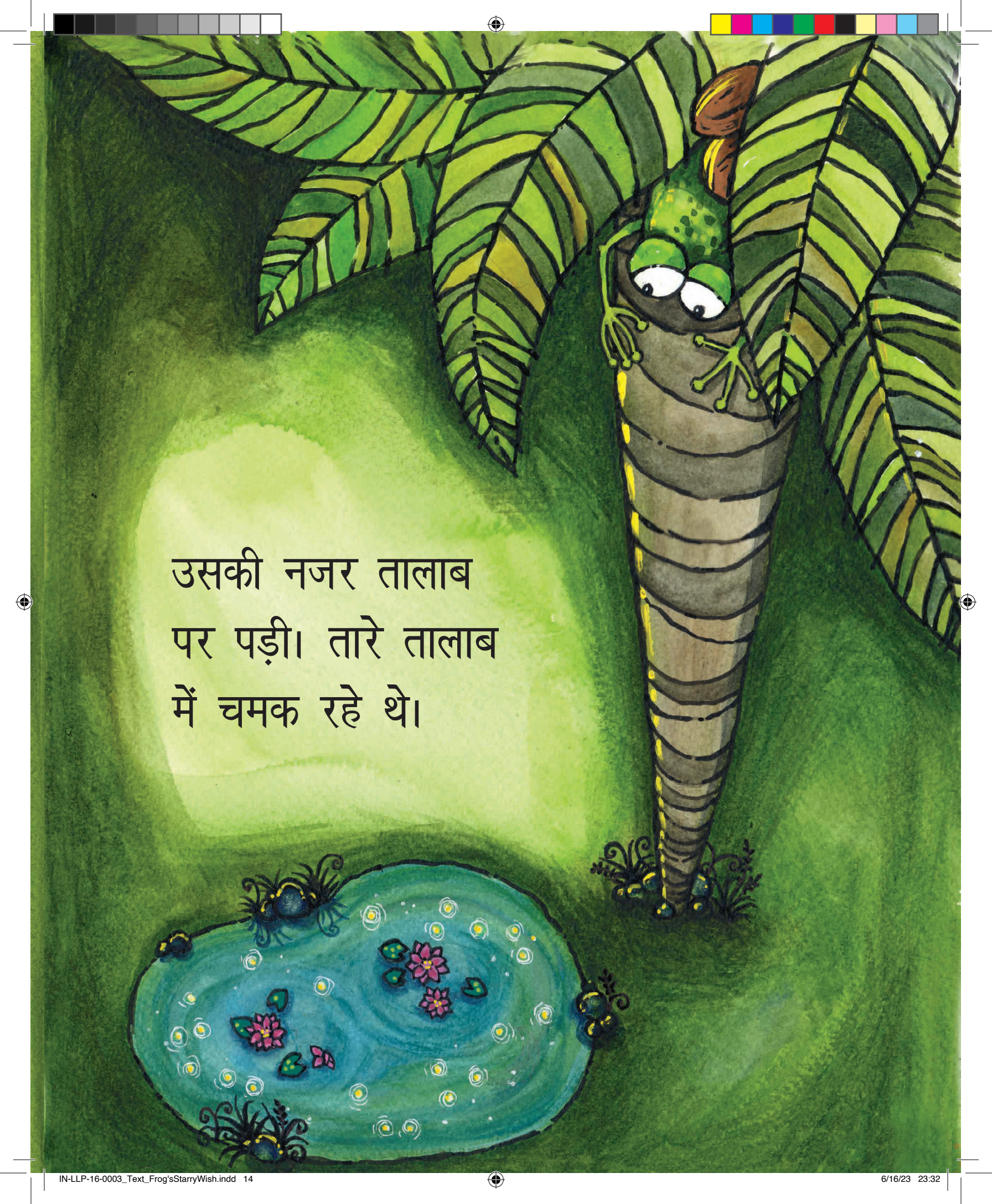




वह निराश हो गया। उसने नीचे
देखा। डर के मारे उसकी साँस
अटक गई।

दिल पर हाथ रखा।
खुद को समझाया।
डरो मत। हिम्मत रखो।





उसकी नजर तालाब
पर पड़ी। तारे तालाब
में चमक रहे थे।



तारों को देख खुश
हुआ। लगा दी छलाँग
तालाब की ओर...





जैसे-जैसे वह नीचे आ
रहा था। वैसे-वैसे तारे
भी पास आ रहे थे।



छपाक से पहुँचा
पानी में।



बाहर आया।
बैठ गया किनारे पर।



अब तारे तालाब में
चमक रहे थे।

